

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3985
27 मार्च, 2026 को उत्तर के लिए

इस्पात संयंत्रों द्वारा कोयले की खपत

3985. श्री अनिल कुमार यादव मंदादी

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि देश भर के इस्पात संयंत्र प्रति वर्ष लगभग 40 मीट्रिक टन कोयले की खपत करते हैं;

(ख) यदि हाँ, तो देश भर के इस्पात संयंत्रों को आवंटित किए गए कोयले का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सभी इस्पात संयंत्रों की अपनी कोयला वाशरी है;

(घ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

इस्पात राज्य मंत्री

(श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा)

(क): वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान, कोकिंग कोल की खपत लगभग ~60 एमटी थी, जिसका उपयोग मुख्य रूप से ब्लास्ट फर्नेस प्रचालन में किया जाता है। इस्पात उद्योग भी थर्मल कोल का उपयोग करता है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से डायरेक्ट रिड्यूस्ड आयरन (डीआरआई) उत्पादन या विद्युत उत्पादन में किया जाता है।

(ख) से (ङ): इस्पात एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र है। इस्पात कंपनियां अपनी आवश्यकता और प्रौद्योगिक-आर्थिक व्यवहार्यता के आधार पर कोयले सहित कच्चे माल की अधिप्राप्ति विभिन्न स्रोतों से करती हैं। केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (सीपीएसई) में, कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) और स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के पास अपनी स्वयं की प्रचालनरत कोयला वाशरी हैं। वर्तमान में सभी इस्पात विनिर्माताओं के पास समर्पित वाशरी नहीं हैं। इसके कारणों में संरचनात्मक और प्रौद्योगिक-आर्थिक बाधाएं, स्वदेशी कोयले में राख की अधिक मात्रा, कोकिंग ग्रेड कोयले की सीमित उपलब्धता और वाशरी अवसंरचना की पूंजी-गहन प्रकृति शामिल हैं। इस्पात उत्पादकों का एक बड़ा हिस्सा अपने संयंत्रों में उपयोग के लिए आयातित कोकिंग कोल या तीसरे पक्ष द्वारा वॉशड कोल पर निर्भर है।
